

पद ३२

(राग: भूप - ताल: धुमाळी)

कोण्या सुकृत दैव हें फळले। गुरुहस्तामृत शिरीं पडलें। मन माझे
वळलें, स्वहितगुज कळलें॥ध्रु॥ किति भ्रम हें अहा किति भ्रम
हें। कोण बद्ध कोण जगिं सुटलें भूतगुण नटलें व्यर्थ जन
शिणलें॥१॥ किति गुज हें अहा किति गुज हें। बहुशास्त्र वेदही
थकलें अनुभवी थिजलें मौनपर्णीं रमलें॥२॥ किति सुख हें अहा
किति सुख हें। हें पंचभूत नाहीं सरले देखणें फिरलें स्वरूपचि
भरलें॥३॥ (चाल) किति धन्य भाग्य विश्वाचें। स्वस्वरूपीं स्थिर
परि नाचे। अज्ञानि जीव नरकाचे। सज्ञानि जीव मोक्षाचे। हें कपट
मूलतत्त्वाचे आमुचें न तुमचें जो मानील त्याचें॥ तुज नमो बोध
मार्ताण्डा। तूं शमवि वाद पाखाण्डा। निजरूपी ठेवि ब्रह्माण्डा।
नाचवी सुखाचा झेण्डा। हें काव्य बोलणें सरलें संभ्रम पुरलें मीपण
नुरलें॥४॥